आदिवासी विमर्श

हिंदी साहित्य में अन्य प्रचलित विमर्शों में आदिवासी विमर्श भी चर्चा के केन्द्र में रहा है। लेखन के साथ गोष्ठियों, व्याख्यानों में इसकी व्याप्ति देखी जा सकती है। आदिवासियों का जीवन एक गंभीर चिंतन की अपेक्षा रखता है। यह केवल चर्चा, गोष्टी या उबे मन की तफरी का विषय नही है। १९ वी सदी के पूर्वार्ध में आदिवासियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने का दौर आया था। आस्ट्रेलिया, अफ्रिका, अमेरिका के बारे में नृत्त्वशास्त्री बाकायदा आदिवासियों के बीच जाकर उन्हीं की तरह रहते हुए अपने निष्कर्ष निकालते थे। विकासवाद की अवस्था में आदिवासियों को प्रकृति का आदिम रूप मानकर सभ्य समाज के पूर्वजों की छवि उनमें देखी जाती थी। यह एक तरह का साम्राज्यवादी चिंतन था, जिसने आदिवासियों को मनुष्य न मानने या पिछडा मानने का वैश्विक दृष्टिकोण तैयार किया। किंतु लोकतंत्र में आदिवासियों के आंदोलन तेज होने लगे। सभ्य योरोप की बर्बरता सामने आने लगी।

यही वह राजनीतिक संदर्भ था जिसने आदिवासी समाज के आंदोलन की सार्थकता पर मुहर लगाई। ''बीसवी सदी में आदिवासी विषय से व्यक्ती बनते हैं। जिन दिनों दुनिया का मध्यवर्ग 'व्यक्तित्व' की लडाई की बात कह रहा था, दबे-कुचले और भूख से जुझते आदिवासी 'अस्तित्व' के लिए लड रहे थे।''[१]

मध्यप्रदेश का पूर्वनिमाड जिला इसी का जीवन्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। निमाड मध्यप्रदेश के पश्चिम की ओर स्थित है। इसकी भौगोलिक सीमाओं में एक तरफ विन्ध्य पर्वत था। दुसरी ओर सतपुडा हैं, जबकि मध्य में नर्मदा नदी है। पौराणिक काल में निमाड अनूप जनपद कह लाता था। बाद में इसे निमाड की संज्ञा दी गई। फिर यह पूर्वी एवं पश्चिमी निमाड के रूप में जाना जाने लगा।

निमाड में हजारों वर्षों से उष्म जलवायु रही है। ६२०६ कि.मी. में फैला यह प्रदेश २०११ की जनगणना के अनुसार १,३०९,४४३ जनसंख्या वाला है। निमाड का सांस्कृतिक इतिहास अत्यंत समृद्ध और गौरवशाली रहा है। विश्व की प्राचीनतम नदियों में एक नदी नर्मदा का उद्‌भव और विकास निमाड में ही हुआ। नर्मदा घाटी सभ्यता का

समय महेश्वर नावड़ाटौली में मिले पूरा साक्ष्यों के आधार पर लगभग ढाईलाख वर्ष पूर्व माना जाता है। विन्ध्य और सतपुडा अति प्राचीन पर्वत हैं। प्रागैतिहासिक काल के आदि मानव की शरणस्थली सतपुडा और विन्ध्य के वन-प्रान्तों में आदिवासी समूह निवास करते हैं। नर्मदा तट पर आदि अरण्यवासियों का निमाड पुराणों में वर्णित हैं। नर्मदा नदी, खेरखाली नदी, छोटी तवा नदी, शिवा नदी खंडवा जिले को निमाड प्रदेश में समाविष्ट करती है। नर्मदा जिले के उत्तर में स्थित है और दक्षिण में सतपुडा बुरहानपूर जिला इसी दक्षिण में स्थित है जिसे तापी नदी समृद्ध करती है। सतपुडा की श्रृखलाएँ खडवा एवं बुरहानपूर जिलों को जोडती है। बुरहानपूर मार्ग अति महत्त्वपूर्ण इसलिए हो जाता है क्योंकि यह उत्तर और दक्षिण भारत को जोडता है। असिरगढ़ का प्रसिद्ध किला दक्षिण की चाबी (Key of the Deccan) कहलाता है। निमाड के पूर्व में हरदा एवं बैतुल जिले हैं। देवास जिला उत्तर में तो खरगोन पश्चिम में स्थित है।

खंडवा जिला मराठों ने १८१८ में अंग्रेजों के अधिन किया था। बाद में यह बरार के रूप में केन्द्र में आया। पश्चिमी भू-भाग जो वर्तमान खरगोन है, आरंभ में इंदौर रियासत का भू-भाग था। स्वतंत्रता के बाद यही बरार और खंडवा नया भारतीय राज्य मध्यप्रदेश बना।

खण्डवा जिला १९५६ से पूर्व ही मध्य प्रदेश निमाड जिले के रूप में जाना जाने लगा था। पश्चिमी और पूर्वी भू-भाग मिलाकर मध्यप्रदेश बनता है। आज खरगोन वास्तविक निमाड प्रदेश माना जाता है। निमाड जिला नेबुडा (नर्मदा नदी का प्रदेश माना जाता है। केन्द्रीय प्रदेश बरार जो मध्यप्रदेश का केन्द्र था, स्वतंत्रता के बाद खंडवा पूर्व निमाड का केंन्द्र बना। यहाँ तक की बुरहानपूर जिला भी इस खंडवा जिले में समाविष्ट था। बुरहानपुर १५ अगस्त २००३ में अलग जिले के रूप में विभाजित हुआ। खंडवा इंदौर डिविजन का हिस्सा है। इसके मुख्य शहर मुंदी, हर्सुद, पंधाना एवं ओमकारेश्वर हैं।

निमाड की पौराणिक संस्कृति के केन्द्र में ओंकारेश्वर, मांधता और महिष्मती हैं। वर्तमान महेश्वर प्राचीन महिष्मती ही है। कालीदास ने नर्मदा और महेश्वर का वर्णन किया है।

खण्डवा का इतिहास इसमें निवास करने वाले प्रसिद्ध व्यक्तित्वों को जाने बिना अपूर्ण प्रतीत होता है। यह अभिनेता अशोक कुमार, अभिनेता एवं प्रसिद्ध गायक किशोर

कुमार एवं अभिनेता अनुप कुमार इन तीन भाईयों की जन्म स्थली के रूप में ख्यातिप्राप्त है। जो मुंबई जाने से पूर्व यही पले-बढ़े। इस भूमि से किशोर कुमार का लगाव इसी से ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने देहांत के बाद खंडवा में ही अंतिम क्रिया की ईच्छा जताई। उनकी समाधि यही पर है। भूतपूर्व मुख्यमंत्री भगवंतराव मंडलोई यही पर जन्मे थे। कबीर की तरह निर्गुण संत मनु रंगीर इसी भूमि पर हुए है। दादाजी धुनीवाले जिन्हें लाखों हिंदू अपना गुरु मानते हैं, तथा गुरुपुर्णिमा पर उनकी समाधी पर पूजा अर्चना करते हैं, इसी भूमि की देन थे। टंट्या भिल किवदंती स्वरूप है, जो आदिवासियों की देश भक्ति की अनूठी मिसाल है। वह इसी वन प्रान्त का वीर समूत था।

मध्य प्रदेश के पूर्वनिमाड जिले में जनजातियों की संख्या अच्छी खासी है। इस प्रदेश की कुल जनसंख्या के लगभग २०.२७% जनजातिय लोग है। ई.स. २००१ की जनगणना के अनुसार मध्य प्रदेश में जो अनुसूचित जनजातियाँ निवास करती है। इनमें से संवैधानिक रूप से जिन जनजातियों को मान्यता प्रदान की गई।

संदर्भ संकेत :

१) हंस - मासिक, अप्रैल, २०१०, दरियागंज, नई दिल्ली.
२) इंटरनेट से उपलब्ध स्त्रोतों के आधार पर.